सं० मो॰ वि० भिवानी/42-87/22962.— चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै॰ 1. परिवहन बॉयुक्त, इरियाणा, चण्डीगढ़, (2) महा प्रबन्धक, हरियाणा राज्य परिवहनं, जीन्द्र के श्रमिक श्री तस्वीर सिंह, पुत्र श्री गोपी राम, मार्फत भी एस० एन० वत्स, गली डाकखाना, रोहतक तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामलें में कोई भोधीणक विवाद है:

प्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायिनिर्णय हेतु निरिष्ट करना वाछनीय समझते हैं; जमाम न्याकि इसलिये, मन, प्रौद्धोगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं० 3(44)84-3-अम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त अधिनियम की घारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, प्रम्बाला, को विवादकुरत ,या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवद्मकों तथा अभिकृत के बीच या तो विवादमस्त मामला है या विवाद से सूर्यगत प्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री तस्वीर सिंह की सेवा समाप्ति नियमानुसार की गई है? यदि नहीं, तो वह किस शहत का हुकड़ार है है कि सं श्री कि कि शहत का हुकड़ार है है कि सं श्री कि कि स्वार्धिक निर्देशक, दी सैन्ड्रक कोप व वैंक, करनाल, के श्रीमक श्री जस वन्त सिंह, पुत्र श्री लक्ष्मी चन्द, गांव व डा० बल्ला, जिला करनाल तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामलें में कोई श्रीद्योगिक विदाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, भौद्योगिक बिवाद अधिनियम, 1947 की बारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 3(44)-84-3श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त अधिनियम की घारा 7 के अधीन गठित सम ग्यायालय, अम्बाला को विद्यादयस्त न्या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निद्य्टिक करते है जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विद्यादयस्त मामला है या विद्याद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री जसवन्त सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० श्री० वि॰ यमुना/2-87/22977.—चं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि (1) साचिव, हरियाणा राज्य विजली वोर्ड, चण्डीगढ़, (2) चीफ इजि॰ हाईडल प्रौजेक्ट, हरियाणा राज्य विजली बोर्ड, गोविन्दपुरी, यमुनामगर, के श्रीमक श्री मामचन्द, पुत श्री चूहड़ सिंह, मार्फत डा॰ सुरेन्द्र कुमार शर्मा, रेलवे रोड़, ब्राहमण धर्मशाला, जगाधरी, तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है:

भौर चंकि इरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, भौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की । यई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना संव 3 (44)84-3-श्रम, दिनांक 18 प्रप्रैस्त 1984 द्वारा उक्त प्रधिनियम की घारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, प्रम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतू निर्दिष्ट करते हैं जो कि उनत प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या की माम चन्द्र की सेवाझों का समापन/छांटी न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो यह किस रातहत का हकदार है ?

सं०. भो. वि./पानीपत/28+87/22984. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि (1) परिवहन आयुक्त, हरियाणा चण्डीगड़, (2) महा प्रवन्धक, हरियाणा रोड़वेज, करनाल के श्रमिक श्री जयपाल, पुत्र श्री जंग राम, गांव फूसगढ़ तहसील व जिला करनाल तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इस के बाद लिखित मामलें में कोई औदोगिक विवाद है;

श्रीर चृंकि हरियाणा के राज्यंपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना विद्यास्त्रीय समझते हैं 🔆

क्या श्री जयपाल, पुत्र श्री जंग राम की सेवाशों का समापन न्यायोचित तथा ठीकु है.? यदि नहीं, तो वह किस राह्रत का हकदार है ?